प्रकाश पाडगांवकार की रचनायात्रा

"कविता : काळ रेल्वेच्यो, मनहारशांच्यो, पावसा पाण्याच्यो" १९९३
"सर्ग घडपाक धर्तरीचो" - १९९४

- डॉ. चंद्रलेखा डिसोज़ा

प्रत्येक समर्थ कलाकार - रचनाकार - जहाँ अपने समसामायिक जीवन की प्रणय आकांक्षाओं, स्वप्नों और आस्था विश्वास के शब्द सिरजता है, वहींपर समाजगत विसंगतियों और राजनितिक दुष्चक्रों के बीच बिखरी हुई मानवीय क्रौंध को भी रेखंकित करता चलता है। वैसे तो प्रकाश पाडगांवकर की रचनायात्रा के पडाव "उजवाडाची पावलां" -१९७६ "वास्कोयन" -१९७७ "हांव मनीस अश्वत्थामो"- १९८५ से गुज़रते हुए १९९४ तक अपनी राह बना चुके हैं। कोंकणी काव्य के इस दौर में इस रचनाकार ने अपने अलग संवेदन के कारण अपना एक अलग ही स्थान बना लिया है, जैसे उनकी नारी संवेदना, समसामायिक काल की प्रतिबध्दता, यथार्थपरक संवेदनशीलता आदि। वास्तव में कोई भी कलाकार जो कुछ नया सृजन करता है या करना चाहता है वह अपने यथार्थ को झेलता है, अनुभूत करता है अथवा विश्लेषित करता है तभी कलाकृति का जन्म होता है। हर मनुष्य इस संसार की रंगभूमि पर अपनी अपनी कला का निरुपण करता है और यह निरुपण अपनी अपनी संवेदना क्षमता अनुरुप ही कर पाता है।

पाडगांवकर जी के पहले तीन काव्य संग्रहों पर; मैं अपनी थिसिस में विश्लेषित रुप में काफी कुछ लिख चुकी हूँ पर यह लेख उनके नये दो काव्य संग्रह को केंन्द्र में रखकर ही लिख रही हूँ। "वास्कोयन" कांव्य संग्रह जैसे शिल्पगत दृष्टी से एक ही सूत्र लेकर चलता है और वह है वास्को और वास्को शहर की समस्या। उसी तरह "कविता : काळ रेल्वेच्यो..." अन्तर्गत काळ रेल क़ाल-महाकाल अविरत चलनेवाली कार्य कलाप सन्दर्भ में रखी गयी है। "मन हारशांच्यो"- मन की विविध आयामी छटा व्यक्त करते हुए अपनी राह पाती है तो पावस ऋतु वर्णित करती हुई - " पावसा पाण्याच्यो" - मनको भीगो कर रख देती है। इस कवि की चाह को "सर्ग घडपाक धर्तरीचो" काव्य संग्रह सूत्रात्मक रुप में व्यक्त करता है। प्रकाश जी के लिए रेलवे

"झुकू झुम झुकू झुम रेल्वे धावतां
कुडीत काळीज जशें धडधडता
जिणेचे असो मंत्र पुर्विल्लो
चलता चलताना काळ धावतां....." पृ. १
"धांवते रेल्वेक पळोवन शेतकार
बुजगावणे शे उबे रावले
म्हणत "रेल्वे काळ व्हांवयता

आर्मी मातयेंत कुसत उल्ले'' पृ. १०

'अनंतकाळा रुळावेल्यान, चलता रेल्वे चिरंतनाची
हांव प्रवासी चार दिसांचो, तरीय जीण लाख मोलाची' पृ. २०

चलते चलते महाकाल दौड रहा है,रेल का दौड़ना और महाकाल का दौड़ना इसी में जिन्दगी भी गतिशील होती है, यही गतिशीलता जीवन है। ''पुनरपी जननम् , पुनरपी मरणम्'' का सन्देश देनेवाली यह रेले अनंत काल तक चलती रहेगी। चलना ही जिन्दगी है, चलती ही जा रही है। हम सब चार दिन के ही प्रवासी हैं फिर भी जिन्दगी मूल्यवान है, अगर जिन्दगी सही ढंगसे जीए तो चार दिन की जिन्दगी भी पर्याप्त है। मनुष्यता की यह जिन्दगी अनंतकाल की पटरी पर चिरंतन रेल्वे दौड़ी जा रही है।

कवि की दृष्टि हमेशा सामान्य आदमी के विकास के लिए सोचती रहती है। रेल्वे में प्रवास करते हुए भी किसान को देखकर जो संवेदना प्राप्त करते हैं उनकी यही दृष्टि उन्हें यथार्थवादी और प्रगतिशील सिद्ध करती है। रेल अनंत समय बहते रहेगी और हम मिट्टी में सड़ते रहेंगे। जैसे धर्मवीर भारती जी अन्धायुग में निरुपित करते हैं कि कोई भी राज्य करे पांडव या कौरव हमारी नियति तो वही रहेगी ''पहरा देना''। शासक बदलते रहे पर सामान्य आदमी की स्थिति, परिस्थिति में कोई अन्तर नहीं पड़ता। वैसे ही पाडगांवकर जी का स्पन्दन है कि रेल बहती जाती है पर किसान तो वहीं पर रहा, उसका विकास नहीं हो पाया। ''मन हारशांच्यो '' अन्तर्गत एक चलित चित्र आता है जो इस प्रकार है-

भावार्थ :
याद यादों की किताब जैसे
मन आयने के पन्ने
एक एक याद उकरते जायें
मन आयने में झूलते जंगल जैसे - पृ. २७

यादों की किताब और मन आयने में जंगलों का झूलना, पत्तों और पन्नों के माध्यम से वर्षा ऋतु में प्लावित करती यादों का झड़ना जैसे बारिश का जड़ना दोनों विचार धारा को बहाकर कई दूर विचारों के जंगल में ले जाती है। यही विचारों का जंगल, जंगलों का विचार एक अलग शिल्प की रचना करता हुआ कोंकणी काव्य में जो उजागर करता है उसकी एक अपनी ही अलग पहचान बनती है।

कोंकणी :
व्हांवता तो हो न्हय वझरो
हो हारशांचो घसघसो
पिल्यार कुडीत हारशे तिगून

थामतलो ताने वसवसो"   पृ. ४२

भावार्थ :
बहाव नहीं यह झरने का
यह तो है आयना - ए- आब
पिते ही यह आबे हयात
तृप्त होती कणकण की प्यास

"आयना - ए- आब" बिम्बन प्रतिबिम्बन होता रहता जैसे केलिडोस्कोप के आयाम। सूर्य की किरनें पानी पर चमकती है आयनों का अंबार पसरता है। इसी को पीने से प्यास बुझती है। पानी की बूँदों का यह रुप-स्वरुप प्रवाहित होकर अलग काव्य सृष्टि करता है। वर्षा ऋतु का वर्णन भी नव सृजन और सर्जन के विचारों को व्यक्त करता है। छोटे छोटे पौधों में धरती तुममें आकाश का जो बिम्बन होता है वह भी शाश्वतता का ही है।

१९९४ में प्रकाश जी का काव्य संग्रह "सर्ग घडपाक धर्तरिचो" प्रकाशित हुआ। धरती पर स्वर्ग लाने के लिए कवि तीन अनुक्रम में बात करते हैं। "मोग अजरंवरी" अर्थात शाश्वत प्रेम, "कृतार्थ सुगुर्वो" - शुभ लक्षण "भविष्य दिश्टावो" - भविष्य साक्षात्कार - कवि की मूल दृष्टि तो श्रीमद्भगवदगीता का सन्देश ही है - "धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।।" आज का हमारा जीवन अधोगतिमय है, भौतिक प्रगति हुई पर मानवीय संस्कार हम भूलते जा रहे हैं। कवि कभी मनुष्यता की बातें करनेवाले भी मिल जाते है जहां मानवता निभानेवाले पाये जातें हैं।

स्त्री - पुरुष के शारीरिक संपर्क से बालक का अस्तित्व बनता है, यही बालक कवि के लिए उत्क्रांति का अगला चरण है। नये कल्प का प्रारंभ भी यहीं से होगा। यहां मनुष्य युध्द नहीं चाहेगा - पृ. ४७। विश्वकल्याण की भावना होगी, शांति और सुख होगा। "विश्वकल्याणा मनीसकायेची, ऋचा उज्वाडा गायतली" - पृ. ५५। इस कल्प में मनुष्य की वृत्ति सात्विक होगी और इस वृत्ति पर प्रतिबिंबन सर्वेश्वर का ही होगा। उसी समय धर्तरी पर स्वर्ग आयेगा।

कोंकणी काव्य यात्रा में दूसरे कवियों ने भी धरती पर स्वर्ग लाने का विचार रखा है, सर्वहारा के बारे में अपना अपना चिन्तन रखा है। उनकी सहानुभूति उस सर्वहारा के प्रति है पर स्वर्ग अपने आप तो आयेगा नहीं उसके लिए मनुष्य को कार्यान्वित होना पड़ेगा। विचार रखना एक बात है और उसके लिए प्रयत्नशील होकर, मनुष्य को अपने मस्तिष्क को बदलना होगा, यह दूसरी बात है। मानवता के विचारों से मनुष्य को उत्कर्ष के लिए प्रयत्न करना पड़ेगा। नर को नारायणत्व और नारी को नारायणीत्व प्राप्त करना होगा। यह प्रयत्नशीलता प्रकाश जी की अपनी विशेषता है। मनुष्य को अपने मनुष्यत्व को प्राप्त करना है, यही उसका मानवीय लक्ष्य है। कवि की यह संवेदना सिर्फ काव्य संवेदना न होकर काव्य द्वारा संवेदनशील मस्तिष्क को उत्कर्ष की राह दिखाकर उस पर चलकर इस मंजिल को पाने

का संवेदन देती है। यहाँ स्वर्ग जादू की छड़ी से प्राप्त नहीं होता पर मानवीय प्रयत्नों से प्राप्त होता है और इसी धरतीपर उसे बसाया जा सकता है। यह संवेदनशील भाव सौंदर्य जो प्रयत्न साध्य है। प्रकाश जी को पूरे कोंकणी काव्य में अलगानेवाली यह उनकी अपनी कार्यान्वित साध्य संवेदना ही है --

"प्राणा प्राणांत विचार सात्वीक
मनीसपण धादोसतली
सर्ग घडपाक धर्तरिचो
कल्प नवो आरंभला"-- पृ. ५८

इस कल्प में नया इतिहास रचा जाएगा। यहाँ फूल खिलते हैं विश्वशांति के और पूरी पृथ्वी, जीवन-बाग़ बन जाएगी।